प्रातः क्लास 29/11/68 ओम शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओम शान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। समझा, समझा, समझाकर कितना समझदार बना देते हैं। पढ़ाई भी समझ है ना। बच्चे तो कुछ भी नहीं जानते हैं। वह है स्थूल पढ़ाई, यह है सूक्ष्म पढ़ाई। बच्चे जानते हैं यह पढ़ाई और कोई नहीं पढ़ा सकते। बाप आये ही हैं पवित्र बनाने और पढ़ाने। एम-ऑबजेक्ट सामने खड़ी है, तो बाप को यादकर खुश भी होना चाहिए। यह भी बच्चे जानते हैं दिन-प्रतिदिन हमको शान्ति में ही जाना है। शा(न्ति) तो सभी को पसन्द आती है। बड़े आदमी जास्ती नहीं बोलते हैं और न ज़ोर से बोलते हैं। तुम बहुत-2 बड़े आदमी बनते हो। वास्तव में तुमको आदमी भी नहीं कहेंगे। तुम देवता बनते हो। देवताओं का बोलना बहुत थोड़ा होता है। तुमको भी अभी देवता बनना है तो टॉकी से बदल साइलेंस में रहना है। शान्ति में रहने वाले के लिए समझेंगे इनको अपने ऊपर अटेन्शन है। जबकि तुमको शान्तिधाम में जाना है तो बोलना भी बहुत आहिस्ते है। आहिस्ते बोलते-2 शान्तिधाम चले जाना है। जितना तुम शान्ति में रहते हो उतना ही शान्ति फैलाते हो। तुमको बहुत शान्ति में रहना चाहिए। आवाज़ से बात करना अच्छा नहीं लगता। क्रोध भी अच्छा नहीं है। कोई भी विकार न रहना चाहिए। देखना चाहिए हम कोई से लड़ते-झगड़ते तो नहीं हैं। बाप ने समझाया है हियर नो ईविल। ऐसी बातों से किनारा कर देना चाहिए। तो दोनों का मुख बंद रहेगा। हर बात में दैवी गुणों को धारण करना है। कोई आवाज़ करे, बोलो– शान्त। आवाज़ मत करो। सतयुग में शांति रहती है ना। मूलवतन में तो है ही शान्ति। शरीर ही नहीं तो फिर बोलेंगे कैसे? यह बातें तकदीरवान ही धारण कर सकते हैं। फटी(फूटी) तकदीर वाले न सुनते हैं, न अमल करते हैं। जो अमल करते हैं श्रीमत पर चल, उनकी ही ऊँच तकदीर बनती है। बाप मत तो बहुत अच्छी देते हैं। समझाते हैं अपने घर जाना है। टॉकी से मूवी में आना है। तो फिर साइलेंस में चले जावेंगे। जो भी मिले उनको यही पैगाम देना है। यह दुनिया तो है ही जंगली जनावर। जानवर कहें अथवा बन्दर कहें। तो जितना साइलेंस में रहेंगे उतना ही समझेंगे यह योग की धुन में हैं। शान्ति का स्वभाव अच्छा है। वह बड़े ही मीठे लगते हैं। जाना भी है शान्तिधाम। जानते हो योगबल से पवित्र भी बनना है। माया भी बहुत वार करती है। बलवान से ही लड़ती है। गीत भी है ना। माया कितना गुप्त दुश्मन है। बड़ा भारी दुश्मन है। बड़ी बलवान है माया। बच्चों को फीलिंग आती है बरोबर माया का वार होता है। यह 5 भूत हैं ना। देह-अभिमान का सबसे कड़ा भूत है। मनुष्य तो बिल्कुल ही पत्थर बुद्धि हैं। तुमको भी अभी बाप समझाते हैं तब फीलिंग आती है। बरोबर हम पारस बुद्धि से पत्थर बुद्धि बने हैं। फिर बाप पारस बुद्धि बनाते हैं। यह कोई शास्त्रों की नॉलेज नहीं। ऐसे भी नहीं यह कोई शास्त्र पढ़ा हुआ है। भल गीता पढ़ते थे; परन्तु शास्त्रों में तो कुछ भी है नहीं। वह है ही भक्तिमार्ग। यह भी ड्रामा का चक्र फिरना ज़रूर है। टाइम पास होता जाता है। कहानियाँ बनाते हैं ना लांग-लांग एगो क्या हुआ था। बाप बच्चों को मीठी कहानियाँ बैठ सुनाते हैं। थोड़ी सी बेहद की कहानी है। बाप बैठ समझाते हैं 5000 वर्ष पहले इनका राज्य था। यह अक्षर कब कोई सन्यासी आदि नहीं बतावेंगे। वह जानते ही नहीं। यह है नई दुनिया की नई कहानी, जो तुमको सुनाई जाती है। यह है शास्त्रों के विरुद्ध। शास्त्रों में तो लिख दिया है भित्तर-ठिक्कर में परमात्मा है। जंगली जानवरों मिसल बकते रहते हैं। रात-दिन का फर्क है ज्ञान और अज्ञान में। भक्ति अज्ञान को कहा जाता है। ज्ञान का सागर तो एक ही बाप है। उसने ही ज्ञान सुनाकर पुरानी सृष्टि को पलटाया है। यह अन्दर में चलना चाहिए। बाप को याद करने से ही बेड़ा पार हो जाता है। ऐसे नहीं कि साधु-संत आदि को याद करने से बेड़ा पार होता है। वह बिचारे तो कुछ भी नहीं जानते। उन पर भी तरस पड़ता है ना। बाप को कहा ही जाता है रहमदिल। कितना अच्छी रीत पढ़ाते हैं। कहते हैं कल्प-2 अनेक बार तुमको पढ़ाकर गया हूँ। बाप जो ऐसा है वैसा विरला ही कोई जानता है। बाप भी यह बतलाते हैं मैं इनका आधार लेता हूँ। मैं आता ही हूँ पत्थर बुद्धि को पारस बुद्धि बनाने। सभी पत्थर बुद्धि हैं। चित्रों को देखकर समझने की कोशिश नहीं करते हैं।

ब्रह्मा को देखकर ही..... बोलो भगवान तो निराकार है, यह तो बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में पिछाड़ी में खड़ा है। अभी फिर पारस बुद्धि बन रहे हैं। तुम बच्चों के सामने एम-ऑबजेक्ट खड़ी है। यह ज्ञान है ही बहुत शान्ति का। इसमें कोई वेद-शास्त्र आदि पढ़ने का नहीं है। सतयुग में न तो भक्ति है, न संगमयुगी ज्ञान रहता है। तुमको वर्सा मिल जाता है। फिर तुम बहुत अच्छी रीत राज्य करते हो। ताकत रहती है। कोई लश्कर आदि की बात ही नहीं। कोई बारूद आदि की बात नहीं। कोई डर की बात नहीं। यहाँ कितना डर रहता है। राजाओं का भी ड्रामा अनुसार देखो क्या हाल हुआ है! अभी तुम समझते हो हम ही सो पूज्य पावन थे फिर हम ही पतित पुजारी बने हैं। जो भी मिले उनको यह समझाना चाहिए– अभी आत्माओं के बाप को याद करो, मौत आ रहा है, यह पुरानी दुनिया बदलनी है। तो कुछ न कुछ असर पड़ता रहेगा। तुम पैगम्बर हो ना। सभी के ऊपर तुम्हारी महर होनी चाहिए। महर करने वाले बाप की याद में बड़ा ही शांत में रहेंगे। सिर्फ पैगाम देना है बेहद के बाप को याद करो, तो बेहद का सुख-शांति मिलेगी। लौकिक बाप पास बहुत धन है तो बहुत वर्सा मिलेगा ना। बेहद के बाप के पास तो है ही विश्व की बादशाही। हर 5000 वर्ष बाद विश्व की बादशाही मिलती है। बच्चों में बड़ी रॉयल्टी चाहिए। फालतू बोलने से न बोलना बहुत अच्छा है। बहुत-शांति में काम करना पड़ता है। बच्चों को बहुत मीठा हो चलना है। ज्ञान न है तो उनमें 5 भूत रहते हैं। उनमें सभी किचड़ा है। भक्ति तो बिल्कुल जैसे किचड़ा है। ज्ञान है खस्तुरी(कस्तूरी)। सतयुग में कितनी नेचरल खुशबूएँ रहती हैं। सो बच्चों को खुशी होनी चाहिए। हम बाप के पास बैठे हैं। बाप कल्प-2 ऐसे ही पढ़ाते हैं। यह ड्रामा चलता रहता है। जो पास हुआ वह फिर रिपीट ज़रूर होगा। चेंज नहीं हो सकती। तो इस समय बाप को याद करो तो पाप कट जायें। बच्चों को सा॰ आदि तो बहुत हुये; परन्तु सा॰ से कोई फायदा नहीं। वह तो है सिर्फ एम-ऑबजेक्ट। दैवीगुण भी धारण करनी है। ऐसा (ल॰ना॰) बनना है। बच्चों को समझाते तो बहुत अच्छा है; परन्तु पत्थर बुद्धि हैं, कुछ भी बुद्धि में बैठता ही नहीं। बाप कहते हैं याद से ही पाप कटेंगे और तुम स्वर्ग में चले जावेंगे। यह भी किसको सुनावेंगे तो वह खुश होगा। नौकरों आदि को भी यह शिक्षा देनी चाहिए कि बेहद के बाप को याद करो तो बेड़ा पार है, तुम पावन बन जावेंगे। तुम बच्चे जानते हो हम अनेक बार ऐसे पतित से पावन, पावन से पतित बने हैं। दुनिया में मनुष्यों को तो यह भी मालूम है नहीं। इसलिए कोशिश की जाती है बड़े-2 आदमियों को समझाने की, कुछ तो पैगाम सुनें। सेकण्ड में जीवनमुक्ति गायन है ना। जीवनमुक्ति तो राजा की भी, तो प्रजा की भी है। बाकी पुरुषार्थ से नम्बरवार पद होते हैं। प्राइम मिनिस्टर भी पुरुषार्थ से ही बनते हैं। पोलीटिकल बातों में अच्छी रीत आते हैं। तुम्हारे इसमें भी लिखा हुआ है रिलीजियो पोलीटिकल। वह है जिस्मानी। तुम हो रूहानी। राजधानी की स्थापना तो होनी ही है। तुम युद्ध के मैदान में हो; परन्तु इनकॉगनिटो पोलीटिकल हो। बाप से विश्व की बादशाही पाते हो। तुम्हारा यह राजयोग मशहूर है। बाकी तो सभी हैं हठयोग। उन्हों की किताब आदि देखो तो वण्डर लगता है। उन्हों का भी अपना धंधा है। बहुत फॉलोअर्स हैं। उनका छोड़ना ही मुश्किल है। उन्हों की जैसी राजाई है। सो अपनी राजाई ऐसे थोड़े ही छोड़ेंगे। समय पर अनायास ही यह सभी खत्म हो जावेगा। सारी दुनिया कैसे खत्म होगी वह भी देखेंगे, योगबल से अपनी आयु भी बढ़ाते जाते हैं। बाप ने बताया था इनकी आयु 100 वर्ष होगी। करांची में आयु देखने वाले आते थे। सभी कहते थे इनकी आयु 75 वर्ष है। अगर बढ़े तो बहुत बढ़ जावेगी। योगबल से आयु कितनी बड़ी हो जाती है। वहाँ तो अकाले मृत्यु किसकी होती ही नहीं। गरीब और साहुकार के पद में तो फर्क है ना। गरीब अच्छी रीत पुरुषार्थ करते हैं साहुकार बनने का। तो अभी पुरुषार्थ करना चाहिए। अपना कल्याण करना चाहिए। यज्ञ की बहुत रुचि से सर्विस करनी चाहिए। बहुत रुचि से काम किया जाता है। सेवा का लायक भी बनना है। कहते भी हैं मिठरा घुरत घुराये। जो खुद ही डारते(डर्टी) रहेंगे उनकी कोई सेवा क्या करेंगे। किसकी दिल होगी। जो यज्ञ की बहुत सेवा करते हैं उनकी सेवा की जाती है।

बाकी जो डिससर्विस करते हैं, सेवा का अंश बिल्कुल ही नहीं उनकी सेवा करने किसकी दिल होगी? यह भी बुद्धि होनी चाहिए, पहचान होनी चाहिए, बाबा के यज्ञ में सर्विसएबल कौन है। फूल को देखने से ही फूल बनेंगे। काँटों का तो संग ही बिल्कुल छोड़ देना चाहिए। तुम भी काँटे बन जावेंगे। संग तारे कुसंग बोरे। बाबा हमेशा कहते हैं फूल बनना है तो फूलों का संग करो। काँटों का संग काँटा ही करते हैं। संग उनका करना चाहिए जो घड़ी-2 कहते रहते शिवबाबा को याद करो। यहाँ ही संग त(ा)रता और बोरता भी है। काँटे झरमुई-झगमुई की बातें, किसकी अवगुण ही बकते रहेंगे। यह भी समझ होनी चाहिए कि संग किसका करें। हमेशा संग फूलों का करना है। यही एक/दो को याद दिलाओ– शिवबाबा याद है? इसमें खुशी भी होती है। याद दिलाने वाले को थैंक्स देना चाहिए। पतित-पावन शिवबाबा को याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। बहुत कोशिश करनी चाहिए; परन्तु माया भी बड़ी प्रबल है। तुम बच्चे महारथी हो। यह भी महारथी है ना। शिवबाबा कहते हैं जो भी महारथी हैं उन पर ही माया की नज़र है गिराने की। पहलवानों से माया पहलवान हो लड़ती है। गरीब से गरीब होकर लड़ती है। माया की बड़ी चोट खानी पड़ती है। दीवा बुझाने देरी नहीं करती। 8/10 वर्ष बाद भी फिर काम से हार खा लेते हैं। इतना काम बलवान है। देह-अभिमान में आने से झट विकार मुँह दिखाने आवेंगे। हातिमताई का खेल भी यहाँ का है। तुम समझते हो बाप द्वारा हम इतना धनवान बनते हैं। तो ऐसे बाप को याद करना चाहिए ना। कोई भी आवे, पहले-2 पैगाम ही यह दो। शिवबाबा कहते हैं मुझे याद करो। गीता में भी कुछ अक्षर हैं– मनमनाभव। यह महामंत्र है। अर्थात माया को वश करने का महामंत्र है। सारी प्रकृति वहाँ तुम्हारी दासी बन जाती है। तो यह बातें भूलनी न है। काम-काज करते शिवबाबा को याद करना है। शिवबाबा को किसके पैसे की दरकार नहीं। वह तो मनुष्यों को ख्याल होगा पैसे इकट्ठे करने का। यह तो बेहद का यज्ञ रचा जाता है। आपे ही बच्चे चलाते रहते हैं। यहाँ से तो कोई को कुछ ले नहीं जाना है। अचानक ही सभी के पैसे मिट्टी में मिल जावेंगे। दिवाला निकल जावेगा। इसलिए सभी कुछ ट्रान्सफर करना है, नहीं तो मिट्टी में मिल जावेगा। शिवबाबा ऐसे नहीं कहते कि मुझे दो। शिवबाबा तो दाता है ना। ऐसे मत कोई समझे– हमने दिया। नहीं, यह बड़ी गुह्य समझने की बातें हैं। दिल में आना चाहिए हम तो 21 जन्मों लिए ले रहे हैं। भक्तिमार्ग में भी बहुत दान-पुण्य आदि करते हैं। समझते हैं– हम ईश्वर अर्थ करते हैं, दूसरे जन्म में ढेर मिलेगा। वह है इन डायरैक्ट। यह है डायरैक्ट। यह सभी बातें बाप बैठ समझाते हैं। जो कुछ लेते हैं तुम्हारे ही सर्विस में लगाने लिए। तुम गुल-2 बन जावेंगे, फिर पैसा क्या करेंगे? बाप कहते हैं गरीबों को बहुत साहुकार बनाता हूँ। जो अभी साहुकार हैं, वह पीछे जागेंगे, फिर उनका कुछ भी लेंगे ही नहीं। कहेंगे– अच्छा, रखो। कपड़े पर चित्र भी बन जावेंगे। अभी देरी है ना। बाहर वालों में से कोई अच्छा जाग जाये, तो भारत में भी आवाज़ हो। सभी कहेंगे ब्रह्माकुमारियाँ ऐसी नॉलेज देती हैं, जिससे स्वर्ग का मालिक बनते हैं। यह (ल॰ना॰) मालिक हैं ना। जब तुम दिखावेंगे तब समझेंगे पैराडाइज़ इनको कहा जाता है; परन्तु पिछाड़ी में पुरुषार्थ करने का टाइम नहीं मिलेगा। तुम बच्चों को अन्दर में बहुत खुशी होनी चाहिए, हम शिवबाबा की सर्विस में उपस्थित हैं। शिवबाबा को याद करने से ही हमारे पाप कट जावेंगे। यह भी गायन है सावनशाह की हुण्डी भरी। हुण्डी भरने वाला तो बैठा है ना। ड्रामा में नूँध है। कल्प-कल्प भी हुण्डी भरी थी, जिससे हेविन स्थापन हुआ था। अभी भी हो रहा है। कोई ख्याल नहीं रहता। पाई-2 कल्प पहले मिसल देते रहते हैं। देते नहीं, यह तो लेते हैं। 21 जन्मों लिए जमा हो जाता है। फिल 21 जन्म खा-पीकर खलास कर देंगे। भक्तिमार्ग में कितना उल्टा-सुल्टा खर्चा आदि करते आये हो। अच्छा, बच्चों को बापदादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग और नमस्ते।